भारत में एच॰आई॰वी॰ एड्स और संबंध्ति चुनौतियाँ

डॉ॰ आभा

संसार में अनेक भयंकर बीमारियाँ है जिससे लोगों की मृत्यु हो जाती है लेकिन एडस भयानक बीमारी के साथ–साथ लाइलाज भी है यदि कोई व्यक्ति इस रोग से ग्रसित हो जाता है तो अन्त में उसकी मृत्यु हो जाती है। एड्स एक ऐसी बीमारी है जो विश्व में खतरे के रूप में फैली हुई है। यदि एच॰आई॰वी॰ एड्स की वर्त्तमान समय में दुनियाँ की प्रमुख सार्वजनिक स्वास्थ्य चुनौतियों में शामिल किया जाए तो यह अतिशयोक्ति नहीं होगी क्योंकि विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार वर्ष 2018 के अंत तक वैश्विक स्तर पर लगभग 38 मिलियन लोग एच॰आई॰वी॰ से प्रभावित थे। आँकड़ों पर गौर करे तो इसके कारण अब तक दुनियाँ भर में तकरीबन 35 मिलियन लोगों की मृत्यु हो चुकी है। भारत में एच॰आई॰वी॰ एड्स के रोगियों की संख्या कुल जनसंख्या का लगभग 0.26 प्रतिशत (2.1 मिलियन) है।

राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर इस संक्रमण पर नियंत्रण प्राप्त करने का काफी प्रयास किया गया। इसी का परिणाम है कि वर्ष 2018 में निम्न और मध्य आय वाले देशों के तकरीबन 62 प्रतिशत व्यस्को और लगभग 54 प्रतिशत बच्चों को एच॰आई॰वी॰ एड्स संबंधित स्वास्थ्य सुविधाएँ प्राप्त हो रही है।